ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-8* September- 2021
Innovation The Research Concept

पुनर्जागरण की पुनर्व्याख्या
Reinterpretation of the Renaissance

Paper Submission: 14/09/2021, Date of Acceptance: 24/09/2021, Date of Publication: 25/09//2021

वगता राम चौधरी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
श्री राजेन्द्र सूरि कुन्दन जैन राजकीय महिला महाविद्यालय,
जालोर, राजस्थान, भारत

सारांश

यूरोप में 14वीं शती मे धर्म, दर्शन, कला, संस्कृति, उद्योग, कृषि, शिक्षा, साहित्य आदि में आमूलचूल क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। धर्म सुधार आंदोलन इस युग की महत्वपूर्ण विशेषता है। भौतिक और आर्थिक तौर पर यूरोप की मजबूती इसी बौद्धिक आंदोलन के कारण संभव हो सकी।

In Europe in the 14th century there were radical changes in religion, philosophy, art, culture, industry, agriculture, education, literature etc. The religious reform movement is an important feature of this era. The strength of Europe both physically and economically was possible due to this intellectual movement.

मुख्य शब्दः रेनेसां, यूरोप, पुनर्जागरण, बौद्धिकता, आधुनिक, धर्मसुधार, आंदोलन, दार्शनिक, युग, विचार, पाश्चात्य, तार्किक, विकास, सभ्यता, ईसाई।

Keywords: Renaissance, Europe, Renaissance, Intellectualism, Modern, Reformation, Movement, Philosophical, Era, Thought, Western, Logical, Development, Civilization, Christian.

प्रस्तावना

यूरोप में 14वीं शती में प्रत्येक क्षेत्र में मूलभूत परिवर्तनों के लिए जो आंदोलन जन्मा उसे पुनर्जागरण (रेनेसां) कहा गया। 14वीं शती से प्रारंभ हुए इस आंदोलन ने सर्वाधिक रूप से धर्म और कला के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए।

यूरोप में 14वीं शती से संस्कृति, साहित्य, धर्म, शिक्षा, उद्योग, दर्शन, कला आदि क्षेत्रों में आमूलचूल सकारात्मक परिवर्तन हुए जिन्हें 'रिनेसां' कहा गया। वास्तव में इसे पुनर्जागरण का काल माना जाता है। प्रसिद्ध हिन्दी आलोचक डॉ. अमरनाथ के अनुसार "14वीं सदी तक आते-आते यूरोप में प्राचीन रोमन साम्राज्य के ध्वंस से उत्पन्न अव्यवस्था शांत हो चुकी थी। आक्रमणकारी नयी जातियाँ पुरानी लातीनी जातियों द्वारा इसाई धर्म में दीक्षित और आत्मसात कर ली गयी थीं। उस समय यूरोपीय संस्कृति में एक नये जीवन का संचार हुआ जिसका वेग लगभग 19वीं सदी तक बना रहा। इस युग में नये-नये अन्वेषण और आविष्कार हुए। धर्म का आधिपत्य कम हुआ, तार्किक दृष्टि को महत्व मिला और मनुष्य की प्रतिष्ठा बढ़ी।"[1]

धर्मयुद्धों (क्रूसेड) से थकी-हारी जातियाँ जब अपने जीवन और मानवीय मूल्यों के बारे में सोचने लगी..... धर्माचार्यों के अनुचित व्यवहार और कलाकारों की विलासिता से आहत होने लगी तो पुनर्जागरण के प्रयास शुरू हुए।

क्रूसेड (धर्मयुद्धों) से अस्त-पस्त हुई ईसाई सभ्यता और धर्म अपनी तमाम तरह की तकलीफों से बाहर आने के मार्ग देखेन लगीं और इस क्रम में स्वयं ईसाई धर्म में व्याप्त आडम्बर, विलासिता और अतार्किकता का खुला विरोध शुरू हो गया। धर्म सुधार आंदोलन में जॉन बाइक्लिफ, जॉन हस, सेवोनोरोला, इरैस्मस, मार्टिन लूथर जैसे धर्म सुधारकों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जा सकती है। पोप जैसे कैथोलिक धर्माचार्यों की अनीति के विरूद्ध धर्म सुधारकों ने व्यापक आंदोलन चलाया और प्रोटेस्टेंट पंथ अस्तित्व में आया। कैथोलिकों को अपनी गलतियों का एहसास हुआ तो वे प्रतिवादात्मक धर्म सुधार में लग गए।..... ईसाई धर्म की इस उथल-पुथल में भयंकर खून-खराबा भी हुआ। जॉन हस को जिंदा जला दिया गया ज्विंग्ली संघर्ष करते हुए मारा गया..... कॉलविन को व्यापक विरोध झेलना पड़ा..... लेकिन उनकी उठाई पुनर्जागरण की आंधी ने ईसाई धर्म को आडम्बरों, अंधविश्वासों और बुराईयों के गर्त से बाहर निकाला।

स्वेन जैसे पाश्चात्य विद्वान का कथन है कि "मध्यकाल की समाप्ति और आधुनिक काल का प्रांरभ पुनर्जागरण है।"

इस तरह सिमोंड लिखते हैं कि "पश्चिमी राष्ट्रों का मध्य युग से निकलकर आधुनिक युग में प्रवेश पुनर्जागरण है।"

डेविस के अनुसार "मानव के स्वातंत्र्य प्रिय साहसी विचारों की अभिव्यक्ति पुनर्जागरण है।"

पंडित जवाहर लाल नेहरू के अनुसार "विद्या का पुनर्जन्म पुनर्जागरण है।" समूचे यूरोप में सामंतवाद का विरोध होना और जनता का स्वतः स्फूर्त होकर हर क्षेत्र में सकारात्मक सुधार के लिए प्रेरित होना ही पुनर्जागरण का अहम बिन्दु माना जा सकता है।..... सामंतवाद केवल समाज या राजनीति के क्षेत्र में नहीं था, अपितु धर्म, संस्कृति, कला और दर्शन के क्षेत्र में भी एक प्रकार की सामंती सोच विकसित हो चुकी थी जिसे पुनर्जागरण के उद्भव ने क्षय करना प्रारंभ किया और अन्ततः लगभग समाप्ति तक पहुँचा दिया।

वेनिस, फ्लोरेन्स, जिनेवा, पेरिस, लंदन जैसे नगरों का वास्तविक और समावेशी उदय पुनर्जागरण काल की ही देन है। इटली यूरोप की सांस्कृतिक राजधानी के तौर पर स्वयं को स्थापित करने में लगा तो कला और संस्कृति के क्षेत्र में नये आयाम उभरे।

दयाल सिंह भाटी के अनुसार "पुनर्जागरण के परिणाम बहुत ही महत्वपूर्ण और दूरगामी प्रमाणित हुए। इसके कारण मध्यकालीन मान्यताओं एवं अंधविश्वासों का अन्त हुआ। मध्यकालीन जीवन पर धर्म छाया हुआ था। उसका स्थान विचार स्वातंत्र्य एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने लिया। परिणाम स्वरूप स्वविवेक, तर्क, कार्यकारण संबंध परक चिंतन का महत्व बढ़ा प्रत्येक वस्तु या विचार को वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार प्रयोग की कसौटी पर कसके स्वीकार करने की मानसिकता का विकास हुआ।" [2]

पुनर्जागरण का दौर वास्तव में तर्क, दर्शन, विज्ञान और विकास के साथ-साथ सृजन की उत्कृष्टता का दौर माना जा सकता है। अनेक कलाकारों, धर्मसुधारकों, दार्शनिकों और संस्कृतिविदों के साथ-साथ विभिन्न साहित्यकारों ने पुनर्जागरण के विकास क्रम को पूर्ण ऊर्जा और उत्साह के साथ गतिमान किया।

ई. श्रीधरन लिखते है- "ईसाई रवैये की सर्वव्यापकता ने ईश्वर की निगाह में सभी मनुष्यों को बराबर कर दिया कोई प्रिय लोग नहीं है, कोई विशेषाधिकार प्राप्त नस्ल या वर्ग नहीं है, कोई एक ऐसा समुदाय नहीं है जिसकी किस्मत दूसरे से ज्यादा महत्वपूर्ण है।"[3]

पुनर्जागरण के प्रभाववश लोगों में सर्वव्यापक चेतना का संचार हुआ और मानववाद की कल्याणकारी व्याख्या व्यवहार में फलीभूत होने लगी। लोगों की शान, तर्क और विचारशीलता के प्रति आकर्षण बढ़ता गया। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन के अनुसार "हमारी पहचान की समस्या ज्ञान मीमांसा से भी जुड़ी है और व्यावहारिक तर्कों से भी। अपने इतिहास और संस्कृति के दृष्टिकोणीय वस्तुगत अवलोकन से यह अनिवार्यता प्रभावित होती है। इन दृष्टिकोणीय वस्तुगत अवलोकनों से इतिहास और संस्कृति की जो सीमित समझ बनती है, वह भी हमारी पहचान को प्रभावित करती है।" [4]

सेन के इस कथन पर विचार करें तो यह बात सहजता से समझ आ जाती है कि पुनर्जागरण (रेनेसां) का दौर इस कथन की अक्षरशः पालना करता है। पुनर्जागरण काल में शिक्षा का विकास और विस्तार हुआ। कागज और छापाखाना अस्तित्व में आये। नगरों का विकास हुआ। साहित्य में दांते (डिवाइन कॉमेडी), पेट्रार्क (अफ्रीका), बोकेशिया (डेकामेरन) टासो (जेरूस्लम डिलीवर्ड), सर टॉमस मूर (यूटोपिया), मिल्टन (पेराडाइज लॉस्ट), फ्रांसिस बेकन (दि न्यू अटलांटिस), शेक्सपियर (हैमलेट, मैकबेथ, ऑथेलो, किंगलियर, रोमियो एंड जूलियट, जूलीयस सीजर, मर्चेंट ऑफ वेनिस), इरेस्मस (मूर्खता की प्रशंसा) सर्वाटीज (डानक्विकजोट), केमोंस (लूसियाड), मैकियावली (दि प्रिंस) आदि ने छाप छोड़ी।

जिमटो जैसे चित्रकार ने पुनर्जागरण काल की चित्रकला का दायरा मजबूत और उत्कृष्ट बनाया। उसे आधुनिक चित्रकला जन्मदाता माना जाता है। लियोनार्दो द विंची ने मोनालिसा और 'द लास्ट सपर' जैसी चित्रकृतियों की रचना की, तो माइकल ऐंजिलों ने 'द लास्ट जजमेंट' जैसी उत्कृष्ट चित्रकृति रची। राफेल को 'सिस्टाइन मेडोना' जैसी चित्रकला के लिए याद रखा जाता है, तो टीशियन को पोर्ट्रेट बनाने के लिए याद किया जाता है।

संगीत के क्षेत्र में पैलेस्टिना जैसे संगीतकार का उदय हुआ, खगोल के क्षेत्र में कॉपरनिकस, गैलोलियो, आइजक न्यूटन, ब्रूनों आदि यादगार व्यक्तित्व माने जाते है।

देकार्ते तारतगलियों केपलर, स्टेविन, नेपियर आदि गणित के क्षेत्र में नवीन संभावनाएं तलाश कर अद्भूत परिणाम देने वाले गणितज्ञ रहे।

वेसेलियस, विलियम हार्वे आदि को चिकित्साशास्त्र के क्षेत्र में अहम योगदान देने वाला माना जाता है। हैलमोंट, कोडस, पैरासेल्स, रॉबर्ट बाइल आदि रसायनशास्त्र के क्षेत्र में कार्य करने वाले प्रमुख रसायनशास्त्री थे।

पेट्रॉर्क को मानववाद के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के कारण मानववाद का पिता कहा गया।

इस तरह पुनर्जागरण (रेनेसां) युग में समूचे यूरोप में स्वतंत्र चिंतन एंव वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हुआ। व्यावहारिक जीवन के विकास पर ध्यान दिया गया। इतिहास के तर्कसंगत व

वैज्ञानिक पक्ष की बात की गई। देशी भाषाओं व साहित्य के विकास पर अधिक जोर दिया गया। नये स्थानों की खोज हुई। व्यापारिक व वाणिज्यिक विकास का मार्ग खुला। कला और साहित्य में उत्कृष्ट उन्नति एवं सृजन हुआ। इस युग में यूनानी, रोमन और अरबी शैलियों का विकास करने में ब्रुनेलेस्की, माइकल एंजिलों और राफेल का अहम योगदान रहा। मूर्तिकला में माइकल ऐजेलों ओर लकॉडेला रोवियों के नाम उभरे।

पुनर्जागरण की स्पष्ट और सटीक शब्दों में परिभाषा प्रस्तुत करने वाले विद्वानों में डॉ. अमरनाथ का नाम महत्वपूर्ण माना जाता है। उनके अनुसार ''पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ है'' किसी लुप्त प्रायः अथवा बिसरी हुई संस्कृति एवं सभ्यता का पुनः जीवित या सचेत होना। अंग्रेजी भाषा में पुनर्जागरण के लिए 'रिनेसा' RENAISSANCE शब्द का प्रयोग किया जाता है। साधारणतया पुनर्जागरण का यह अर्थ माना जाता है कि प्राचीन युग की उन्नत यूनानी एवं रोमन सभ्यता जो मध्यकाल में प्रायः लुप्त हो चुकी थी, कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में पुनर्जागरण काल में फिर से सजीव हो उठी।'' 5

यूरोप के पुनर्जागरण से एशिया के अनेक देशों पर भी प्रभाव पड़ा जिनमें से भारत भी एक है यद्यपि ये प्रभाव कालान्तर में सामने आया किन्तु इस प्रभाव के कारण जनमानस में चेतना और बौद्धिकता का संचार हुआ।

यूरोप की औद्योगिक क्रांति से अंग्रेजी दासता वाला भारत भी अछूता नहीं रहा और यहाँ रेल्वे तथा कल-कारखाने क्रमशः विकसित होने लगे।

यूरोप में पुनर्जागरण (रेनेसां) युग को धर्मसुधार के लिए विशेष तौर पर याद किया जाता है। डॉ. मथुरालाल शर्मा लिखते हैं -''धर्म सुधार आंदोलन के प्रांरभ में धर्मशास्त्रों पर बल देने की प्रवृतियाँ प्रबल रहीं, किन्तु अन्त में लोकतंत्र की समर्थक और निरंकुश राजसत्ता का विरोध करने वाली प्रवृत्तियों ने जोर पकड़ा। प्राकृतिक, दशा, सामाजिक समझौता, जनता की प्रभुसत्ता और प्रतिनिधि शासन के विचारों का विकास हुआ जिनसे 17वीं, 19वीं शताब्दियों के महान राजनीतिक विवादों का सूत्रपात हुआ।'' 6

यूरोप में पुनर्जागरण का प्रभाव घर रूप से 15वीं शती के बाद से स्पष्ट तौर पर दिखने लगा था। चर्चा में व्याप्त अनाचारों का मार्टिन लूथर जैसे धर्म सुधारक जब विरोध कर रहे थे लगभग उसी समय सांस्कृतिक-साहित्यिक उन्नति और उदारता के मार्ग प्रशस्त हो रहे थे।

आज भी 'मोनालिसा' जैसी महान चित्र-कृति का महत्व केवल उसके सौन्दर्य के कारण नहीं है, अपितु यह सृजन पुनर्जागरण का जीवित प्रमाण है।

पुनर्जागरण काल मानववाद के विकास, धार्मिक अंधविश्वासों के उन्मूलन, व्यक्ति के महत्व, मध्यम वर्ग के उदय, कला में यथार्थता, वाणिज्यवाद एवं पूंजीवाद के समुचित विकास, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद की उन्नति, राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना आदि विशेषताओं के कारण याद किया जाता है। कॉलविन- जिसे 'प्रोटेस्टेंट' कहा जाता था से लेकर इरैस्मस जैसे निडर लेखकों तक का पुनर्जागरण में जो योगदान रहा है उसे इस काल की आधारशिला माना जाना चाहिए।

जॉन बॉक्स के प्रेसबिटेरियन अनुयायी, जॉन वाइक्लिफ के लोलार्डस अनुयायी लम्बे समय तक इस बात की गवाही देते रहे कि धर्म की अनुचित और अराजक मान्यताओं एवं प्रथाओं का यदि डटकर विरोध किया जाए तो मानवाद का मार्ग सरल और सहज बनाया जा सकता है..... इसी सहजता और सरलता से सांस्कृतिक-साहित्यिक, शैक्षिक और समग्र विकास हो सकता है।

कुस्तुंतुनिया के पतन ने जिस तरह पुनर्जागरण के द्वार खोले उसी तरह मार्टिन लूथर जैसे धर्मसुधारकों के संघर्ष ने जनता की आंखें खोल दी। रोजर बेकन ने इंसान की अहमियत और अस्तित्व को सर्वप्रमुख मानकर जनता में जागृति का संचार किया। कागज और मुद्रण के आविष्कार ने बौद्धिकता के क्षेत्र में एक तूफानी परिवर्तन को जन्म दिया।

हाल्वेन, ड्यूरर, जॉन कोले, लोरेजो वैला, लॉर्ड ऐक्टन आदि भी पुनर्जागरण की मानवीय ईंटे मानी जा सकती हैं..... इन सभी संघर्षशील सुधारकों ने रेनेसां का मार्ग मजबूत करने में सहायक की भूमिका निभाई।

जिस अनाचार, अराजकता, अनैतिकता, मूल्यहीनता, रूढिवादिता, कट्टरतावाद, आडम्बर आदि से यूरोप रेनेसां के युग में ही मोटे तौर पर बाहर आ गया, उनमें से अनेक बुराईयों को भारतवर्ष का पुरातनपंथी और कट्टरता रखने वाला वर्ग आज भी आत्मसात किये हुए है। भारत में कबीर से लेकर ज्योतिबा फूले और अंबेडकर से लेकर गाँधी जैसे सुधारक हुए है लेकिन कट्टरता और रूढ़िवाद की जकड़न से जनता को निकाल पाना फिर भी उतना आसान नहीं

रहा। कदाचित आर्थिक उन्नति की स्पर्धा से हमारा समाज सामाजिक और धार्मिक कट्टरताओं की दलदल से निकल पाएगा।

प्रत्येक युग में एक रेनेसां की आवश्यकता रहती है क्योंकि हर युग की अपनी रूढ़ियाँ और आडंबर है।

अध्ययन का उद्देश्य

पुनर्जागरण (रेनेसां) पुनर्व्याख्या करने की आवश्यकता इसलिए है भी की जनता की समस्याओ को समझकर इतिहास से सबक लिया जा सके और जनकल्याण हेतु इस वैचारिकता को प्रयुक्त किया जा सके।

निष्कर्ष

रेनेसां के कारण यूरोप की राजनीति, संस्कृति, धार्मिक व्यवहार, आर्थिक और साहित्यिक दशाओं तथा शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन हुए। कला के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। वास्तव में रेनेसां -जिसे भारत में पुनर्जागरण विशेषण से संबोधित किया जाता है- के कारण पूरी दुनिया को प्रेरणा मिली और मानव के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली - डॉ. अमरनाथ, पृष्ठ 312*
2. *विश्व का इतिहास - दयाल सिंह भाटी, पृष्ठ 127*
3. *इतिहास- लेखः एक पाठ्यपुस्तक (500 ई. पू0 से 2000 तक)*
4. *ई. श्रीधरन (अनुवाद - मनजीत सिंह सलूजा) पृष्ठ 51*
5. *अतीत का वर्तमान (भारतीय इतिहास के अध्ययन का संदर्भ)- अमत्र्य सेन, (अनुवाद-अरविंद मोहन), पृष्ठ 15*
6. *हिन्दी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली- डॉ. अमरनाथ, पृष्ठ 312*
7. *यूरोप का इतिहास- मथूरालाल शर्मा, पृष्ठ 63*